VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

एलयू में एक मई तक ऑनलाइन क्लासेस चलाने का आदेश जारी

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लविवि में ऑनलाइन क्लास आगे भी जारी रहेंगी। लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन ने एक मई तक ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने के आदेश जारी कर दिए हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन ने साफ किया है कि विश्वविद्यालय और सभी महाविद्यालयों में अब ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की जाएंगी। ऑनलाइन डाटा सुरक्षित रखने की भी बात कही है। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सेमेस्टर परीक्षाओं को लेकर कोई स्पष्ट आदेश जारी नहीं किया गया है। उपमुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा की ओर से रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली के दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को भी 15 मई तक टालने

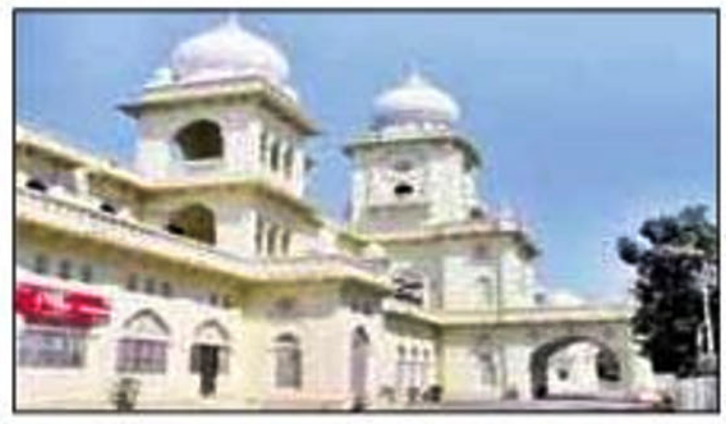

की बात कही गई है। स्नातक, परास्नातक और पीएचडी में प्रवेश के लिए चल रहे ऑनलाइन आवेदन की तिथि पहले ही बढ़ाई जा चुकी है। यह आवेदन अब मई माह तक लिए जाएंगे। लगातार बिगड़ती स्थितियों को देखते हुए उम्मीद जताई जा रही है कि आवेदन की प्रक्रिया और भी आगे बढ़ सकती है। लखनऊ विश्वविद्यालय की स्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं टलने के बाद छात्रों की ओर से परीक्षाओं को रद्द करने की मांग उठाई जा रही है। छात्रों का कहना है कि प्रथम और तृतीय सेमेस्टर के छात्रों को सीधे अगली कक्षा में प्रमोट किया जा सकता है। शिक्षकों ने भी छात्रों की मांग का समर्थन किया है।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : कार्यालय खोलने को लेकर आज लिया जाएगा फैसला

एक मई तक ऑनलाइन क्लास

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। बढ़ते संक्रमण को देखते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन ने विवि व सहयुक्त महाविद्यालयों में एक मई तक ऑनलाइन क्लास चलाने का निर्णय लिया है। कार्यालय खोलने को लेकर शासन के निर्देश के अनुसार शुक्रवार को विस्तृत फैसला होगा। वहीं, हालात को देखते हुए कार्यालय खोलने को लेकर शिक्षक-कर्मचारी डरे हैं।

रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह ने आदेश जारी कर कहा कि लविवि और कॉलेजों में एक मई तक ऑनलाइन क्लास चलेंगी। कॉलेज व विभाग इससे जुड़े रिकॉर्ड भी अपने पास सुरक्षित रखें, ताकि जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जा सके। उन्होंने कहा कि कार्यालय खोलने को लेकर कुलपति से वार्ता के बाद विस्तृत आदेश जारी होगा। 50 फीसदी ही कर्मचारियों को बुलाया जाएगा।

हालांकि, विवि से लेकर कॉलेजों तक शिक्षक-कर्मचारी अभी कार्यालय न खोलने की मांग कर रहे हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (लूटा) और लखनऊ विश्वविद्यालय सहयुक्त महाविद्यालय शिक्षक संघ (लुआकटा) पहले ही इसके लिए उपमुख्यमंत्री, कुलपति व डीएम को पत्र भेज चुका है। कमोवेश यही स्थिति अन्य विवि की भी है। वे भी शासन के निर्देश पर शुक्रवार को कार्यालय खोलने पर निर्णय लेंगे।

एकेटीयू : कोरोना संक्रमण के कारण दो दिन बंद

लखनऊ। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिवर्सिटी (एकेटीयू) में बढ़ते कोरोना संक्रमण के कारण बृहस्पतिवार व शुक्रवार को एहतियातन बंद किया गया है। रजिस्ट्रार नंदलाल सिंह की ओर से जारी सूचना के अनुसार, परिसर में काफी कर्मचारियों के अस्वस्थ होने के कारण उक्त दो दिन विवि पूर्ण रूप से बंद रहेगा। इस दौरान विभागों का सैनिटाइजेशन होगा। कर्मचारी व अधिकारी घर से आवश्यक कार्य करेंगे और फोन पर भी उपलब्ध रहेंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

पॉलीटेक्निक में दाखिले के लिए आवेदन तिथि 30 तक बढ़ी

लखनऊ। कोरोना को देखते हुए पॉलीटेक्निक संस्थानों में दाखिले के लिए होने वाली संयुक्त प्रवेश परीक्षा 2021 की प्रक्रिया को बढ़ा दिया गया है। हालांकि, अभी परीक्षा की तिथियों में बदलाव नहीं किया गया है। छात्र अब 30 अप्रैल तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। परिषद प्रभारी सचिव राम रतन ने बताया कि ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 30 अप्रैल तक बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। इससे पहले 15 अप्रैल तक आवेदन कर सकते थे। अभी तक करीब 2,18,000 से ज्यादा छात्रों के आवेदन आ चुके हैं। छात्र वेबसाइट www.jeecup.nic.in पर दिशा-निर्देश देख सकते हैं। छात्र हेल्पलाइन नंबर 0522-2630106, 2630678, 2636589 व 2630667 पर भी संपर्क कर सकते हैं। ((माई सिटी रिपोर्टर))

DAINIK JAGRAN PAGE 4

दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष थे डा. केसी पांडेय

लखनऊ विवि के दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष डा. केसी पांडेय का गुरुवार को असामयिक निधन हो गया। विवि से जुड़े लोगों ने बताया कि वह पिछले कई दिनों कोरोना से संक्रमित थे। प्रो. पांडेय के निधन पर लविवि प्रशासन ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

प्रो केसी पांडेय (फाइल फोटो)

TOI PAGE 2

LU professor and philosopher KC Pandey loses corona battle

Times News Network

Lucknow: A wave of sadness and shock gripped Lucknow University's teaching fraternity when renowned philosopher and head of the university's Philosophy department, Prof KC Pandey (51), succumbed to Covid-19 on Thursday.

The pandemic has so far claimed the lives of six LU professors.

Prof Pandey had attended the inauguration of the new building of Abhinavgupt Institute of Aesthetics on March 23, an event that turned out to be a Covid-19 superspreader. Soon after the programme, 13 participants – 10 serving and two retired LU teachers, and the principal of a degree college in Lakhimpur Kheri – tested positive. Three, including Prof Pandey, have died so far. The other two are Dean, arts and head of Sanskrit department Prof BK Shukla and retired LU professor and former vice-chancellor of Sampurnanand Sanskrit University Ashok Kalia.

Earlier, the virus has claimed the lives of retired professors Dinesh Kumar (73) and AK Sharma (65) and a professor of applied economics VK Goswami (52).

Prof Pandey was known nationally and internationally for his research work and books on Ludwig Josef Johann Wittgenstein, an Austrian-British philosopher who worked primarily in logic, philosophy of mathematics, philosophy of mind, and philosophy of language. He is survived by his wife and two children, a son (16) and daughter (17).

"Prof Pandey was a brilliant academician and it was his interest in Shaiva philosophy that made him attend the inauguration of the Institute. After attending the event he complained of high fever and was admitted to Dr Ram Manohar Lohia hospital on April 3," said a professor in philosophy department.

With over 10 decades of teaching experience, Prof Pandey had written four books of which one was published last year. The book, titled 'Recent responses to the philosophy of Wittgenstein' was among best sellers.

"We have lost a gem at such a young age. This is not only the loss of Lucknow University but the entire teaching fraternity," said Prof Vibhuti Rai, a faculty member in geology department.

'Energetic organizer & persistent scholar'

Times News Network

Lucknow: The death of LU professor and philosopher Prof KC Pandey came as a rude shock to the teaching fraternity.

Prof Pandeys' colleague and friend, LU dean, academics, Prof Rakesh Chandra said, "To me fair friend, you never can be old or gone. How can I speak of Prof Pandey in the past tense? An energetic organizer, an avid reader, a persistent scholar of the Austrian philosopher Wittgenstein has gone too soon."

Prof Pandey brought systematic change encouraging research scholars to make presentations every Saturday, said Prof Rakesh Chandra

"He began his academic journey from then Allahabad. He then moved to Delhi, Dharmashala, Gorakhpur and finally to Lucknow. I wanted him in our department to continue the legacy of analytic philosophy for which we were known," he added. Prof Chandra said he brought systematic change encouraging research scholars to make presentations almost every Saturday without fail. "Always respectful, he took ideas seriously and acknowledged his seniors like us. Scholars from all over the country were in touch with him and he organized their online interactions with our students even during these difficult times," he added.

He said Prof Pandey was ambitious and wanted prestigious positions in national bodies and professorship in a central university, which he certainly would have received in future had it not been for the abrupt end.

"He has published and presented a large number of papers nationally and internationally. He also edited a number of books and anthologies. Restless and constantly engaged, he was very popular in the Indian philosophical community," Prof Chandra added.

"His students are working on various areas of philosophy, including Indian thought and yoga," he said.